

ऐसे परम तपोनिधि जहाँ-जहाँ, जाते हैं...जाते हैं ।  
 परम शांति सुख लाभ जीव सब, पाते हैं...पाते हैं ॥  
 भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूँ ध्याऊँ ।  
 वरूँ शिवनारी... नारी, वरूँ शिवनारी ॥४॥

(१२)

हे परम दिगम्बर यति, महागुण व्रती, करो निस्तारा ।  
 नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥  
 तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो ।  
 बाईस परीषह जीत धरम रखवारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥१॥  
 तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो ।  
 है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥२॥  
 तुम क्षमा शांति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर ।  
 है हित-मित सद् उपदेश तुम्हारा प्यारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥३॥  
 तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी ।  
 है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥४॥  
 है यही अवस्था एक सार, जो पहुँचाती है मोक्ष द्वार ।  
 'सौभाग्य' आप-सा बाना होय हमारा, नहिं तुम बिन हितू हमारा ॥५॥

(१३)

है परम-दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन-वन करें बसेरा ।  
 मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥  
 शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा ।  
 मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा ॥टेक॥  
 जहाँ क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत् शुचिता की सौरभ महके ।  
 संयम-तप-त्याग-अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके ।  
 है ब्रह्मचर्य की गरिमा से, आराध्य बने जो मेरा ॥१॥

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते।  
 उपसर्ग परीषह-कृत बाधा, जो साम्य-भाव से सहते।  
 जो शुद्ध-अतीन्द्रिय आनन्द-रस का, लेते स्वाद घनेरा ॥२॥  
 जो दर्शन-ज्ञान-चरित्र-वीर्य-तप, आचारों के धारी।  
 जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज चैतन्य विहारी ॥  
 शाश्वत सुख दर्शन-ज्ञान-चरण में, करते सदा बसेरा ॥३॥  
 नित समता स्तुति वन्दन अरु, स्वाध्याय सदा जो करते।  
 प्रतिक्रमण और प्रति-आख्यान कर, सब पापों को हर्ते ॥  
 चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ, जिनमें करें बसेरा ॥४॥

(१४)

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में, रे अकेले वन में, मधुवन में।  
 मधुवन में आज मची रे होली, मधुवन में ॥टेक॥  
 चैतन्य-गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते।  
 एक ही ध्यान रमायो वन में, मधुवन में ॥होली. ॥१॥  
 ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई।  
 विभाव का ईंधन जलायें वन में, मधुवन में ॥होली. ॥२॥  
 अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा।  
 पतली धार न भाई मन में, मधुवन में ॥होली. ॥३॥  
 हमें तो पूर्ण दशा ही चाहिये, सादि-अनंत का आनंद लहिये।  
 निर्मल भावना भाई वन में, मधुवन में ॥होली. ॥४॥  
 पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती।  
 श्रेणी माँड़ी पलक छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥५॥  
 नेमिनाथ गिरनार पे देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो।  
 केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥६॥  
 बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते।  
 भव से पार लगाये वन में, मधुवन में ॥होली. ॥७॥

\*\*\*\*\*